



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय शिक्षा में नवाचार की भूमिका

खुशबू कुमारी, रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. पुष्पा श्रीवास्तव, प्राचार्य, आरएल महतो शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोसरा

अमूर्त

शिक्षा हमारे देश का एक प्रमुख मौलिक अधिकार है। आजादी के बाद भारत की साक्षरता दर लगातार बढ़ी है। भारतीय नागरिकों को अंग्रेजी का बहुत अच्छा ज्ञान है जो उन्हें दुनिया भर में रोजगार योग्य बनाता है। भारतीयों ने पिछले कुछ वर्षों में कुछ अद्भुत खोजें की हैं। नवाचार हमारे देश और पूरी दुनिया की प्रगति की कुंजी है। शिक्षा के क्षेत्र में भी नवाचार बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारी शिक्षा प्रणाली प्रौद्योगिकी के अभ्यास को बढ़ावा देती है। हमारे पास एक संतुलित शिक्षा प्रणाली है जो कम्प्यूटरीकरण, शारीरिक श्रम और बेहतर सामग्री को समान महत्व देती है। कम से कम प्राथमिक स्तर तक शिक्षा को तनाव मुक्त बनाना जरूरी है लेकिन साथ ही स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा देने की जरूरत है। शिक्षा को छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना चाहिए। छात्रों को उनके अच्छे काम के लिए सराहना की जानी चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि वे अपनी गलतियों से सीखें।

कीवर्ड: संतुलित शिक्षा, कम्प्यूटरीकरण, समग्र विकास, प्राथमिक शिक्षा।

परिचय

हमारे देश के नागरिकों के मुख्य मौलिक अधिकारों में से एक शिक्षा का अधिकार है। 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। कई वर्षों से, भारत ने विशेष रूप से आजादी के बाद अपनी साक्षरता दर को लगभग 75% तक बढ़ावा देने के लिए प्रशासित किया है। प्राथमिक शिक्षा का पहले से कहीं अधिक विस्तार हुआ है।

नवाचार

भारतीयों ने शून्य जैसी असाधारण खोजें की हैं। एक शून्य का कोई मान नहीं होता लेकिन किसी अन्य पूर्णांक के पीछे रखा गया मान चमत्कार होता है। अभूतपूर्व, है ना? यह नवाचार की शक्ति है। नवाचार हमेशा महंगा या असाधारण पहल नहीं होता है; इसके विपरीत, नवाचार की भावना दुर्लभ संसाधनों के न्यूनतम इनपुट से अधिकतम मूल्य उत्पन्न करने में निहित है। सतत और समावेशी नवाचार इसी पर निर्भर करता है। दुनिया के प्राकृतिक संसाधनों की तेजी से थकावट, बढ़ती उम्मीदों, आय अंतराल और पूरे ग्रह में लाखों गरीब और वंचित समुदायों के जीवन स्तर को बढ़ाने के महत्व सहित अस्थिर और मिश्रित कारकों का मिश्रण तेजी से, समावेशी की आवश्यकता पर प्रीमियम रखता है। और प्रभावी नवाचार। दुनिया भर में लेकिन विशेष रूप से भारत जैसे बड़े देशों में, चढ़ाई योग्य नवाचार सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों को दूर करने का एक उपाय बन गया है। धीमी प्रगति के साथ समस्याओं का संतुलित समाधान होना चाहिए। मानवता की सफलता लोगों की रचनात्मक क्षमता के उपयोग पर निर्भर करती है।

शिक्षा में नवाचार

शिक्षा में गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तन के लिए नवाचार आवश्यक है। दक्षता बढ़ाने और सीखने की गुणवत्ता और इच्छिटी बढ़ाने के लिए इन संशोधनों की आवश्यकता है

अवसर। यद्यपि शिक्षा अपनी गुणवत्ता बढ़ाने के लिए परिवर्तन को स्वीकार करती है परन्तु अन्य क्षेत्रों की भाँति उत्पादकता, दक्षता, गुणवत्ता और समता में समुचित प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अभाव में कोई सुधार नहीं हो पाता है। समाज में नवाचार का समर्थन करने के लिए सही कौशल विकसित करके शिक्षा के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है। उपयुक्त शिक्षण और अभ्यासों द्वारा आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। शिक्षा के लिए सरकार द्वारा स्मार्ट इनोवेशन स्ट्रैटेजी विकसित की जानी चाहिए। डिजिटल तकनीकों के उपयोग से शिक्षा का स्तर बढ़ने वाला है। वास्तव में, शिक्षा व्यवस्था में व्यक्तियों को नई तकनीकों से लाभ मिल रहा है। वे लोग तकनीक के उपयोग की कमी के कारण प्रगति के पथ पर नहीं हैं। डिजिटल कौशल उन लोगों के लिए रोजगार, आय और अन्य सामाजिक परिणामों के मामले में एक महत्वपूर्ण रिटर्न उत्पन्न करते हैं, जिनके पास नहीं है, लेकिन उनके लिए बेहतर जीवन के अवसरों के लिए बाधाएं हैं।

अंग्रेजी में महारत

पहुँच क्षमता की कमी के कारण शिक्षा प्रणाली अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं है। हमारे देश ने शिक्षा के माध्यम से सफलता हासिल की है लेकिन हम स्वीकार नहीं करते हैं। हम एकमात्र देश हैं जहां अंग्रेजी भाषा में हमारे कौशल की अत्यधिक मांग है। भारतीय एक से अधिक भाषा बोलते हैं और अंग्रेजी में विशेषज्ञ हैं जो दुनिया भर में व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। हमारी शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी भाषा शिक्षा की पहली भाषा है इसलिए हमारे पास बेहतर संचार कौशल है। वास्तव में अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होने के कारण ही हम उच्च शिक्षा या नौकरी प्राप्त कर पाते हैं।

सीखने के लिए सौहार्दपूर्ण माहौल

हाल ही में बच्चों पर अत्यधिक तनाव के कारण शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन का सामना करना पड़ा है। माता-पिता ने अपने बच्चों को दबाव में देखकर कड़वाहट व्यक्त की और उस दबाव को मुक्त करने के लिए अत्यधिक कदम उठाए। महाराष्ट्र में नौवीं कक्षा तक उपस्थिति के आधार पर छात्रों को अगली कक्षा में क्रमोन्नत किया जा रहा है। यह फायदेमंद तो है ही साथ ही बच्चों के लिए हानिकारक भी है। माता-पिता शिक्षा को बहुत आसान बना रहे हैं। बच्चे सीख रहे हैं लेकिन वे इसे गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। प्रतियोगिता बच्चों को शिक्षा की प्रक्रिया का आनंद लेने के साथ-साथ उनकी याददाश्त को तेज रखने में मदद करने का एक तरीका है। यह मन की भागीदारी, सीखने और अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है। शिक्षक भी छात्रों के उत्थान के लिए अपने प्रयासों को समर्पित नहीं कर रहे हैं। इसके विपरीत, कुछ शिक्षक अभी भी दर्द सहते हैं और छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए दिल से प्रयास करते हैं। वे छात्रों को कितने पढ़ने, शारीरिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने और छात्रों को पहल करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयास वास्तव में छात्रों के लिए सार्थक हैं।

परिवर्तन कुंजी है

आने वाली पीढ़ियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रयास वास्तव में सराहनीय हैं। कक्षा में आने से पहले, छात्रों को पर्याप्त ज्ञान हो रहा है। वर्तमान परिदृश्य में प्रौद्योगिकी की उपलब्धता ने छात्रों को ज्ञान प्रदान किया है लेकिन दिशा प्रदान करने की आवश्यकता है। छात्रों को शिक्षा संस्थानों, माता-पिता और शिक्षकों की भागीदारी के साथ मांगलिक परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। सफलता के मार्ग में शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास कौशल की आवश्यकता होती है। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरणा होनी चाहिए और उनकी गलतियों को सुधारने के लिए विचार दिए जाने चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके अपने देश को समृद्ध बनाने का सपना साकार किया जा सकता है।

शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता

शिक्षा हमारी अर्थव्यवस्था का आधार है। हम स्कूल में क्या सीखते हैं यह तय करता है कि हम एक व्यक्ति के रूप में कौन बनते हैं और हमारी सफलता हमारे जीवन के माध्यम से तय करती है। यह बताता है कि हम कठिनाइयों को कैसे हल करते हैं, हम दूसरों के साथ कैसे मेल खाते हैं और हम अपने आसपास की दुनिया को कैसे देखते हैं। की उन्नत अर्थव्यवस्था में

आज, नवप्रवर्तकों और रचनात्मक विचारकों की अगली पीढ़ी के विकास के लिए शिक्षा को अधिक महत्व प्राप्त हो गया है। हालाँकि, आधुनिक शिक्षा की क्षमता और अधिकांश छात्र वास्तव में क्या सीख रहे हैं, के बीच एक बड़ा अंतर मौजूद है? शिक्षा में नवीन विचारों का अधिग्रहण और विश्लेषण अक्सर धीमा होता है। इसके बजाय, कई शिक्षक अभी भी शिक्षण के प्राचीन और अप्रभावी तरीकों से चिपके हुए हैं। छात्रों को पढ़ाने के लिए नवीन शिक्षण तकनीकों का उपयोग करना और उन्हें नवीन सोच के लाभों से अवगत कराना शिक्षा को अगले स्तर तक ले जाना। यह सीखने के लिए एक जुनून पैदा करता है और छात्रों को नवाचार अर्थव्यवस्था में सफल होने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता है।

शिक्षा में नवाचार का दायरा

भारत का शिक्षा क्षेत्र परिवर्तन मोड में है, जिसमें बहुत सारे स्कूल दुनिया में प्रचलित सर्वोत्तम शिक्षण-अधिगम प्रथाओं को अपना रहे हैं। भले ही यह निर्बाध उन्नति या कुल ओवरहालिंग करने के बारे में हो, शिक्षा का उद्देश्य कमोबेश एक ही है - आधुनिक प्रथाओं के साथ एक उज्वल भविष्य का विकास करना। आज, छात्र और उनके अभिभावक एक ऐसे शैक्षिक अनुभव की तलाश करते हैं जो न केवल असतत जरूरतों को पूरा करता है बल्कि उनके भविष्य की नींव भी रखता है। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि छात्रों को दुनिया भर में हो रहे घटनाक्रमों की समय पर जानकारी मिले। इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए दूरदर्शी शिक्षण और सीखने की प्रथाओं का निर्माण एक पूर्वापेक्षा है। प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान के लिए एक रोमांचक, कठिन लेकिन उपयोगी सीखने का माहौल बनाने की आवश्यकता है। बड़े केंद्रों की मौजूदा स्थितियों को देखते हुए, छात्रों की कल्पना की दुनिया अनगिनत विचारों और बहुमुखी प्रतिभा से भरी होती है। उनकी आवश्यकताओं के अनुसार ज्ञान का नियंत्रित प्रदर्शन उन्हें विश्व स्तर का ज्ञान प्राप्त करने में मदद कर सकता है जो उन्हें विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करेगा। यह कहा जा सकता है कि शिक्षा को सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के समामेलन के साथ और उन तरीकों से प्रदान किया जाना चाहिए जो उनके विश्वदृष्टि के अनुरूप और सहायक हों। तो, यह केवल शिक्षा प्रदान करने वाली तकनीकों को बेहतर बनाने का मामला नहीं है। अधिमानतः, सभी शिक्षा हितधारकों को शिक्षा क्षेत्र की मरम्मत के लिए एक बड़ी इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी हमें सीखने के मंच बनाने में सक्षम बनाती है जहां परिवार और समुदाय भी युवा छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं। इन दिनों प्रौद्योगिकी को अधिक नवीन रूप से उपयोग करने के लिए रखा जा सकता है। यह सीखने को कक्षा की चार दीवारों की सीमा से मुक्त करता है और सीखने को और अधिक नवीन बनाने के तरीके बताता है। उपयोग की जाने वाली नवीन विधियाँ विशिष्ट होनी चाहिए। यह प्रचलित रीति-रिवाजों को आगे बढ़ाना या लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके को बदलना हो सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में, भारतीय इतिहास को सीखने के लिए ऑडियो विजुअल चित्रण का उपयोग करना, उन्नत एसटीईएम कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए रचनात्मक नवाचार की आवश्यकता है।

शिक्षा में प्रौद्योगिकी की भूमिका

हमारी शिक्षा प्रणाली प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करती है। हम न केवल यह आश्वासन देते हैं कि छात्र प्रौद्योगिकी को समझते हैं और जानते हैं बल्कि इसके उपयोग को प्रोत्साहित भी करते हैं। आज अधिकांश विद्यालयों में कंप्यूटर 1:1 हैं और वे अपने शिक्षण में भी प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। छात्रों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी तकनीकी रूप से मजबूत हो रहे हैं। इसलिए बच्चे और उनके माता-पिता नवीनतम परिदृश्य के संपर्क में हैं। सभी स्कूल जल्द से जल्द डिजिटल होंगे। हमारे पास एक संतुलित शिक्षा प्रणाली है जो कम्प्यूटरीकरण, शारीरिक श्रम और बेहतर सामग्री को समान महत्व देती है। कई राज्य बोर्ड और साथ ही केंद्रीय बोर्ड बच्चों को अद्यतन पाठ्यपुस्तकें प्रदान कर रहे हैं। पाठ्यपुस्तकों में प्रेरक कहानियों को शामिल किया गया है। बच्चों को एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए और एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार करना चाहिए। शिक्षा के मानवीय पहलू को प्रौद्योगिकी के साथ संरक्षित करने की आवश्यकता है।

शिक्षा के अभिनव विचार

किसी भी शिक्षक के लिए सबसे कठिन कार्य प्रत्येक छात्र का ध्यान आकर्षित करना और दीर्घकालिक प्रभाव बनाने के लिए विश्वासों को सफलतापूर्वक पारित करना है। एक शिक्षक के रूप में, इस कार्य को पूरा करने के लिए सफलतापूर्वक, आपको अपने छात्रों के लिए सीखने के अनुभव को सुखद बनाने के लिए लीक से हटकर विचारों को शामिल करना चाहिए। इसलिए यहां हम नवीन विचार प्रस्तुत करते हैं जो आपको अपनी शिक्षण विधियों को

फिर से खोजने और आपके शिक्षण के रुचि तत्व को बढ़ाने के लिए पूरा करेंगे। नवाचार को प्रेरित करने के लिए उपकरणों की मदद ली जा सकती है। चंचल खेलों में या दृश्य अभ्यास के प्रकार शामिल हो सकते हैं जो युवा मस्तिष्क को रोमांचित करेंगे और उनका ध्यान आकर्षित करेंगे। यह सभी युवा दिमागों की रचनात्मक क्षमताओं का पता लगाने और रचनात्मक प्रस्तावों को प्रेरित करने के लिए एक आजमाई हुई और परखी हुई तकनीक है। अपने सभी विषयों में आविष्कारशीलता की विशेषताएं लानी चाहिए। उनके आविष्कारशील विचारों को विकसित करने के साधनों का अन्वेषण करें। अलग-अलग विचारों का समर्थन करें; छात्रों को गवाही देने की स्वतंत्रता दें। अपनी कक्षाओं के दौरान पाठ्यपुस्तकों को बढ़ाने के लिए दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए। ऑडियो-विजुअल सामग्री में प्रोटोटाइप, फिल्मस्ट्रिप्स, मोशन पिक्चर्स, इमेज, विजुअल रिप्रेजेंटेशन या अन्य ब्रेन एक्सप्लोरिंग उपकरण शामिल हो सकते हैं। ऐसे उपकरण छात्रों की बुद्धि को कई गुना बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। ये तकनीकें छात्रों के सुनने के कौशल को उन्नत करेंगी लेकिन उन्हें विचारों को बेहतर ढंग से समझने में भी सक्षम बनाएंगी। यदि आपको तकनीक पसंद है, तो बच्चों के लिए बहुत सारे स्मार्ट एप्लिकेशन हैं जिनका उपयोग आप अद्भुत प्रस्तुतियाँ बनाने के लिए कर सकते हैं। अपने पाठों में वास्तविक जीवन की घटनाओं को शामिल करने से शिक्षण में ताजगी आएगी और स्कूली शिक्षा में वृद्धि होगी। शिक्षण अधिगम सामग्री तब अधिक प्रभावी होगी जब वे वास्तविक दुनिया के उदाहरणों से जुड़ी होंगी और व्यक्त की जाएंगी। यह छात्रों की चौकसी को प्रज्वलित करेगा और पढ़ाई के प्रति उनकी उत्सुकता और लगाव को बढ़ाएगा। विचारों के आदान-प्रदान को शिक्षण का नियमित अंग बनाया जाना चाहिए। विचार साझा करने से छात्रों में रचनात्मकता बढ़ती है। जब इतने सारे लोग एक ही अवधारणा पर विचार-विमर्श करते हैं, तो यह सभी की भागीदारी सुनिश्चित करता है और सभी के लिए सीखने को अधिक संतोषजनक बनाता है। ये विचार साझा करने वाली सभाएं छात्रों को अंक या अंक की चिंता किए बिना अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करती हैं। विचार साझा करने की सभा के दौरान पालन करने के लिए आपको नियम बनाने चाहिए।

किसी विशेष विषय के लिए किस प्रकार का विचार साझा करना बहुत अधिक नियोजित है, यह पहले से तय किया जाना चाहिए? कुछ विषयों पर सर्वोत्तम सीखने के लिए, विचार साझा करने की सभा को ऑफसाइट स्थान पर आयोजित किया जाना चाहिए। कुछ विषयों की बेहतर समझ के लिए औद्योगिक/मनोरंजक यात्राओं का आयोजन किया जा सकता है जबकि कुछ के लिए स्कूल के खेल के मैदान की सैर ही पर्याप्त है। इससे छात्रों की भागीदारी बढ़ेगी और बेहतर परिणाम सुनिश्चित होंगे। रोल प्ले शिक्षण का एक अन्य महत्वपूर्ण नवीन तरीका है क्योंकि यह छात्रों को विषय से जोड़ता है और उनके व्यक्तित्व विकास में योगदान देता है। यह तकनीक साहित्य, ऐतिहासिक घटनाओं या नवीनतम घटनाओं के शिक्षण के लिए बहुत उपयोगी है। यह तकनीक छात्रों को जो पढ़ाया जा रहा है उसकी व्यावहारिक प्रासंगिकता को समझाएगी। रोल प्ले सभी आयु वर्ग के छात्रों के लिए काम करता है। प्रत्येक आयु वर्ग के लिए थोड़ी सी कंडीशनिंग आवश्यक है। यह विधि बच्चों को पढ़ाने में भी कारगर है। चित्रण विषयों को पढ़ाने का एक अन्य लोकप्रिय तरीका है जिसमें विजुअलाइजेशन सीखने को जोड़ता है। यह इतिहास पढ़ाने के लिए व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक है। इससे जटिल विषयों को भी आसानी से समझा जा सकता है। संचार के माध्यम के रूप में चित्रण के उपयोग को भी प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। एक स्वस्थ कक्षा का वातावरण छात्रों के सीखने के लिए चमत्कार करता है। कक्षा में उत्कृष्ट वातावरण छात्रों की भागीदारी को बढ़ाएगा और व्यापक शिक्षा सुनिश्चित करेगा। आप बहुत कम उम्र के छात्रों से पूरे दिन बैठने और सीखने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। एक सकारात्मक वातावरण शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए चीजों को सर्वोत्तम बनाता है। एक मुक्त विचार दृष्टिकोण शिक्षकों को नवीन शिक्षा तकनीकों को नियोजित करने के लिए तैयार करेगा। हम में से अधिकांश लोग खुले विचारों वाले होने का दावा करते हैं लेकिन यह एक बुनियादी मानव स्वभाव है कि हम बदलाव पसंद नहीं करते हैं। शिक्षकों को अध्ययन कक्षों में नवीन विचारों को नियोजित करना होगा। प्रशासकों को यह भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि शिक्षकों पर अधिक बोझ न पड़े। चूंकि बहुत अधिक काम का बोझ नवाचार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, शिक्षकों को कार्यालय के लिए पर्याप्त मुफ्त अवधि प्रदान की जानी चाहिए, ताकि शिक्षक पूरे दिन उसी जुनून और रुचि के साथ पढ़ा सकें। सहकारी प्रयास हमेशा सर्वोत्तम परिणाम देते हैं। शिक्षकों को एक-दूसरे के साथ स्वस्थ समय बिताना चाहिए। उन्हें शिक्षण को बेहतर बनाने के तरीकों पर चर्चा करनी चाहिए? इस तरह की चर्चा सर्वोत्तम शिक्षण तकनीकों को उकेरती है। झुनझुने और खेल सीखने को रोचक बनाते हैं। इनके प्रयोग से बच्चों का ध्यान अपने आप आ जाता है। वे छात्रों को रचनात्मक और चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं। सकारात्मक मनोरंजन के लिए छात्रों और शिक्षकों

के बीच सामाजिक क्लबों के गठन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। शिक्षक इन क्लबों में छात्रों के साथ रोचक विषयों पर चर्चा कर सकते हैं। यदि आप एक रचनात्मक शिक्षक बनना चाहते हैं, तो आपको इस पर काम करना होगा। इनोवेशन से जुड़ी किताबें पढ़ें और अपने प्रोफेशन से प्यार करना शुरू करें। अपने जीवन को कम तनावपूर्ण बनाएं। सार्थक फिल्में देखें। ये सभी आपकी रचनात्मकता में इजाफा करते हैं और आप पढ़ाते समय जितना अधिक रचनात्मक होते हैं उतना ही नया करते हैं।

शिक्षा में नवाचार के लाभ

इस बात के बहुत से प्रमाण हैं कि जब तकनीक का सही तरीके से उपयोग किया जाता है तो यह छात्रों के सीखने में बहुत मददगार होती है। ज्ञान ग्रहण करने के लिए प्रौद्योगिकी बहुत उपयोगी है; यह संचार में भी सहायक है। शिक्षक और प्रबंधन छात्रों और अभिभावकों को सामग्री और जानकारी भेजने के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करते हैं। प्रौद्योगिकी छात्रों को उनके गृहकार्य में मदद करती है क्योंकि यह उन्हें ऑनलाइन टर्म पेपर और अन्य शैक्षिक अनुप्रयोगों से परामर्श करने की अनुमति देती है और उनकी शिक्षा को बढ़ाती है। यहां कक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के महत्वपूर्ण लाभ हैं: यह विशेष रूप से युवा छात्रों के लिए सीखने को रोमांचक और सहभागी बनाता है, जिन्हें नवीनतम तकनीक का ज्ञान है। यह स्कूल और घर दोनों में शिक्षण के तेज और अधिक कुशल तरीके की सुविधा प्रदान करता है। यह पाठ्यपुस्तकों और संबंधित मुद्रित सामग्री की आवश्यकता को कम करता है जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक लागत प्रभावी हो जाती है। यह सहयोग की सुविधा देता है। छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के बीच प्रभावी सहयोग और स्पष्ट संचार सुनिश्चित किया जा सकता है। यह प्रायोगिक कौशल को बढ़ाने में मदद करता है, छात्रों को त्वरित गति से सीखने की अनुमति देता है और उन्हें प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान किए जाने वाले उपकरणों से पूरा लाभ उठाने में मदद करता है।

निष्कर्ष

इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों ने क्रांति ला दी है लेकिन इसकी भी कुछ सीमाएं हैं। प्रौद्योगिकी के उपयोग में पर्याप्त व्यय शामिल है, शिक्षकों को प्रौद्योगिकी को संभालने के लिए पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं किया गया है और शिक्षार्थी कम मेहनती होते जा रहे हैं क्योंकि इंटरनेट पर सब कुछ बहुत आसान तरीके से उपलब्ध है। सर्वर और कनेक्टिविटी के मुद्दों से समय की बर्बादी होती है, विभिन्न वेबसाइटों के डेटा की प्रामाणिकता के बारे में संदेह जताया गया है, यह निगरानी करना कठिन है कि छात्र वास्तव में कंप्यूटर पर पढ़ रहे हैं या सोशल नेटवर्किंग साइटों पर समय बिता रहे हैं, प्रौद्योगिकी का विकास करने के लिए दुरुपयोग किया गया है।

संदर्भ

- <https://www.entrepreneur.com/article/319725~>
- <https://www.indiatoday.in/education-today/featurephilia/story/-1023702-2017-07-11~>
- <http://www.oecd.org/education/ceri/GEIS2016-Background-document.pdf~>
- <https://yourstory.com/2017/08/innovative-education-india/~>
- <https://ww2.frost.com/frost-perspectives/digital-education-india/~>
- <https://www.edsys.in/16-innovative-ideas-make-teaching-methods-प्रभावी/~>
- <https://philmckinney.com/innovation-classroom-education-needs-innovative/~>
- <https://www.educationdive.com/news/9-benefits-of-implementing-innovative-education/445182/~>
- <https://inc42.com/resources/why-promoting-innovation-in-the-education-sector-is-critical-for-india/~>